केन्द्र व्यवस्थापक की मोहर..............................

केन्द्र की मोहर..............................

98/100

अ

(28 पृष्ठ कवर सहित)

इण्टरमीडिएट परीक्षा

परीक्षार्थी उत्तर-पुस्तिका के किसी भाग में अपना नाम न लिखें।

केन्द्राध्यक्ष एवं कक्ष-निरीक्षकों को यह अधिकार होगा कि वे परिषद की परीक्षा में सम्मलित होने वाले परीक्षार्थीयों की तलाशी ले सकते हैं।

(परीक्षार्थी उत्तर-पुस्तिका के पृष्ठ भाग पर दिए निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़े तथा सावधानी के साथ पालन करें)

निम्नांकित क्रमांक १ से ६ तक की पूर्ति परीक्षार्थी स्वयं करें।

इस उत्तर-पुस्तिका का प्रयोग करने से पहले परीक्षार्थी यह भी देख लें कि उस पर वही वर्ष परिछिद्रित है जिस वर्ष में वह परीक्षा दे रहा हैं।

(परीक्षार्थी सभी प्रविष्टियां शुद्ध एवं स्पष्ट रूप से स्वयं भरें)

1. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंको में) 20245799021
2. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (शब्दों में) दो शून्य दो चार पांच सात नौ नौ शून्य दो एक
3. विषय एवं प्रश्न-पत्र तथा संकेतांक
   - विषय सामान्य हिन्दी
   - प्रश्न-पत्र केवल
   - प्रश्न-पत्र पर अंकित संकेतांक 302 (AZ)
4. परीक्षा का दिन बृहस्पतिवार
5. परीक्षा तिथि एवं पाली 22/02/2024 (द्वितीय)
6. केन्द्र का नाम के० पी० एस० भारती स्कूल, नया गाँव

(कक्ष-निरीक्षक भरें)

उपर्युक्त प्रविष्टियों का निरीक्षण किया।-

परीक्षा-कक्ष संख्या (Exam Room No.) 36

कक्ष-निरीक्षक का पूरा नाम व स्पष्ट हस्ताक्षर [signature] 2141/1304

दिनाँक —————— परीक्षको को चाहिए कि निम्न तालिका में प्रश्न तथा उसके खण्डों का प्राप्तांक यथास्थान भरें

प्रश्न-संख्या	क	ख	ग	घ	ङ	च	योग	प्रश्न-संख्या	क	ख	ग	घ	ङ	च	योग
1								21							
2								22							
3								23							
4								24							
5								25							
6								26							
7								27							
8								28							
9								29							
10								30							
11								31							
12								32							
13								33							
14								34							
15								35							
16								36							
17								37							
18								38							
19								39							
20								40							
योग								योग							

परीक्षक का पूरा नाम एवं स्पष्ट हस्ताक्षर तथा परीक्षक संख्या

For Demo use Only

नाम.....

अनुक्रमांक.....

102 **302(AZ)**

2024

सामान्य हिन्दी

समय : तीन घण्टे 15 मिनट] [पूर्णांक : 100

नोट : i) प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।
ii) इस प्रश्न-पत्र में दो खण्ड हैं। दोनों खण्डों के सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य हैं।

खण्ड–क

1. (क) 'कुटज' के लेखक हैं- 1
(i) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ii) सदल मिश्र
(iii) लक्ष्मण सिंह (iv) लाला श्रीनिवास दास

(ख) 'इन्दुमती' है- 1
(i) प्रथम कहानी (ii) प्रथम उपन्यास
(iii) निबन्ध (iv) इनमें से कोई नहीं

(ग) 'सज्जन' नाटक के लेखक हैं- 1
(i) प्रेमचन्द (ii) लक्ष्मीनारायण मिश्र
(ii) जयशंकर प्रसाद (iv) धर्मवीर भारती

(घ) 'पगडंडियों का जमाना' रचना है- 1
(i) मोहन राकेश की (ii) श्यामसुन्दर दास की
(iii) हरिशंकर परसाई की (iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की

(ङ) 'शेखर एक जीवनी' के लेखक हैं- 1
(i) भीष्म साहनी (ii) जयशंकर प्रसाद
(iii) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(iv) प्रेमचन्द

2. (क) 'प्रेमपथिक' रचना है- 1
(i) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की (ii) महादेवी वर्मा की
(iii) जयशंकर प्रसाद की (iv) मोहन अवस्थी की

Roll no -

[खण्ड- क]

प्रश्नोत्तर संख्या - 1

(क) (i) हजारीप्रसाद द्विवेदी

(ख) (i) प्रथम कहानी

(ग) (iii) जयशंकर प्रसाद

(घ) (iii) हरिशंकर परसाई की

(ङ) (iii) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

(ख) हिन्दी साहित्य के 'आदिकाल' के लिए 'बीज वपन' नाम दिया है- 1

(i) रामचन्द्र शुक्ल ने (ii) रामकुमार वर्मा ने

(iii) आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने (iv) डह० नगेन्द्र ने

(ग) 'तारसप्तक' के कवियों का सम्बन्ध किस शाखा से है- 1

(i) ज्ञानाश्रयी शाखा से (ii) प्रेमाश्रयी शाखा से

(iii) प्रयोगवादी शाखा से (iv) छायावादी शाखा से

(घ) 'कितनी नावों में कितनी बार' काव्य कृति है- 1

(i) सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की

(ii) हरिवंशराय बच्चन की

(iii) गिरिजाकुमार माथुर की

(iv) सुमित्रानन्दन पन्त की

(ङ) 'रामचन्द्र शुक्ल' ने हिन्दी साहित्य के जिस काल को 'रीतिकाल' नाम दिया है, उसे 'श्रृंगार काल' नाम दिया है- 1

(i) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने

(ii) मित्र बन्धु ने

(iii) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने

(iv) डॉ० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' ने

3. दिए गये गद्यांश आधारित निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए- 5x2=10

रमणीयता और नित्य नूतनता अन्योन्याश्रित हैं, रमणीयता के अभाव में कोई भी चीज मान्य नहीं होती। नित्य नूतनता किसी भी सर्जक की मौलिक उपलब्धि की प्रामाणिकता सूचित करती है और उसकी अनुपस्थिति में कोई भी चीज वस्तुतः जनता व समाज के द्वारा स्वीकार्य नहीं होती। सड़ी-गली मान्यताओं से जकड़ा हुआ समाज जैसे आगे बढ़ नहीं पाता, वैसे ही पुरानी रीतियों और शैलियों की परम्परागत लीक पर चलनेवाली भाषा भी जन-चेतना को गति देने में प्रायः असमर्थ ही रह जाती है। भाषा समूची युग-चेतना की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश किस शीर्षक से उद्धृत है?

(ii) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक कौन हैं?

(iii) उपर्युक्त गद्यांश में लेखक ने किस बात पर बल दिया है?

(iv) लेखक ने किसे अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम माना है?

(v) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

अथवा

प्रश्नोत्तर संख्या - 2

(क) (iii) जयशंकर प्रसाद की

(ख) (iii) आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने

(ग) (iii) प्रयोगवादी शाखा के

(घ) (i) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की

(ङ) (i) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने

प्रश्नोत्तर संख्या – 3

संकेत :– रमणीयता और नित्य ---------- माध्यम है।

(i) शीर्षक – भाषा और आधुनिकता। 2

(ii) लेखक – प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी। 2

(iii) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने इस बात पर बल दिया है कि पिछड़ी हुई रुढ़ियो एंव मान्यताओ से ग्रस्त समाज आगे नही बढ़ पाता है। 2

(iv) लेखक ने भाषा समूची युग चेतना को अभिव्यक्ति का एक सशक्त माना है। 2 2

(v) रेखांकित अंश :– रमणीयता ---------- नहीं होती।

व्याख्या :– भाषा की नवीनता ही उसकी सुन्दरता और रमणीयता की घोतक है। जो वस्तु रमणीय होगी वह नवीन भी होगी, उसमें रमणीयता भी रहेगी। रमणीयता और नित्य नूतनता के बिना जनता में विकास सम्भव नही है।

साहित्य, कला, नृत्य, गीत, आमोद-प्रमोद अनेक रूपों में राष्ट्रीय जन अपने-अपने मानसिक भावों को प्रकट करते हैं। आत्मा का जो विश्वव्यापी आनन्द भाव है वह इन विविध रूपों में साकार होता है। यद्यपि बाह्य रूप की दृष्टि से संस्कृति के ये बाहरी लक्षण अनेक दिखाई पड़ते हैं, किन्तु आन्तरिक आनन्द की दृष्टि से उनमें एकसूत्रता है। जो व्यक्ति सहृदय है, वह प्रत्येक संस्कृति के आनंद पक्ष को स्वीकार करता है और उससे आनन्दित होता है। इस प्रकार की उदार भावना ही विविध जनों से बने हुए राष्ट्र के लिए स्वास्थ्यकर है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) सहृदय व्यक्ति किसे स्वीकार करके प्रसन्नचित्त होता है?
(iv) राष्ट्रीय जन अपने-अपने मानसिक भावों को किन-किन रूपों में प्रकट करते हैं?
(v) राष्ट्रीय जन अपने मनोभावों को किन-किन रूपों में प्रकट करते हैं?

4. दिए गये पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 5x2=10

कहते आते थे यही अभी नरदेही,
'माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र भले ही।'
अब कहें सभी यह हाय! विरुद्ध विधाता,
'है पुत्र पुत्र ही, रहे कुमाता माता।'
बस मैंने इसका बाह्य मात्र ही देखा,
दृढ़ हृदय न देखा, मृदुल गात्र ही देखा,
परमार्थ न देखा, पूर्ण स्वार्थ ही साधा,
इस कारण ही तो हाय आज यह बाधा!
युग युग तक चलती रहे कठोर कहानी-
'रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी।'
निज जन्म जन्म में सुने जीव यह मेरा-
'धिक्कार! उसे था महा स्वार्थ ने घेरा।'-"

(i) पाठ के शीर्षक एवं रचयिता के नाम का उल्लेख कीजिए।
(ii) कैकेयी को अभागिन रानी क्यों कहा गया है?
(iii) इस पद्यांश में कवि ने किस प्रसंग का उल्लेख किया है?
(iv) इस पद्यांश में कौन-सा अलंकार है?

प्रश्नोत्तर संख्या – 4

संकेत :– कहते आते थे..... स्वार्थ ने घेरा।"

(i) शीर्षक — कैकेयी का अनुताप
रचयिता — मैथलीशरण गुप्त

(ii) कैकयी को अभागिन रानी इसलिए कहा गया है क्योंकि रानी को महास्वार्थ ने घेर रखा था।

(iii) इस पंद्याश में कवि ने कैकयी के पश्चाताप का उल्लेख किया है।

(iv) अनुप्रास अलंकार

(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

अथवा

सावधान मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तजकर मोह, स्मृति के पार।
हो चुका है सिद्ध, है तू शिशु अभी अज्ञान;
फूल काँटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान,
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।।

(i) पाठ का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

(ii) विज्ञान को 'तलवार' क्यों कहा है?

(iii) विज्ञान का प्रयोग करने में उसे शिशु समाज क्यों कहा गया है?

(iv) पूरे पद में कौन-सा अलंकार है?

(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

5. (क) निम्नलिखित में किसी एक लेखक का साहित्यिक-परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए- 3+2=5

(i) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी

(ii) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

(iii) डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम।

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक-परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों पर प्रकाश डालिए- 3+2=5

(i) सुमित्रानन्दन पन्त

(iii) रामधारी सिंह 'दिनकर'

(ii) महादेवी वर्मा

6. 'ध्रुवयात्रा' अथवा 'बहादुर' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। 5

अथवा 'पंचलाइट' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

Roll no.

(v) प्रथम रेखांकित अंश:- कहते आते थे------ कुपुत्र भले ही।'

व्याख्या:-

कैकयी श्रीराम से कहती हैं कि आज तक मनुष्य यही कहते आते थे कि पुत्र कितना भी दुष्ट क्यों न हो, परन्तु माता उसके प्रति कभी दुर्भाव नही रखती हैं। अब तो मेरे इस चरित्र के कारण लोग अब यही कहेंगे कि माता दुष्टतापूर्ण व्यवहार कर सकती हैं, परन्तु पुत्र कभी कुपुत्र नही हो सकता

द्वितीय रेखांकित अंश :- परमार्थ न देखा..... यह बाधा!

व्याख्या:-

कैकयी श्रीराम से कहती हैं कि मैंने किसी की भी भलाई के बारे में नही सोचा मैंने तो सम्पूर्ण रूप से केवल अपने विषय में ही सोचा। इसी वजह से आज यह परिस्थिति मेरे सामने प्रस्तुत हैं।

प्रश्नोत्तर संख्या - 5

(क) (ii) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

–: संक्षिप्त परिचय :–

- जन्म — सन् 1907 ई०।
- जन्म स्थान — बलिया जिले के दुबे का छपरा।
- पिता का नाम — श्रीमान् अनमोल द्विवेदी।
- माता का नाम — ज्योतिषमती।
- शिक्षा — 'ज्योतिषाचार्य' एंव 'साहित्याचार्य'।
- शैली — विवेचनात्मक, गवेषणात्मक एंव आलोचनात्मक।
- प्रमुख रचनाएँ — कुटज, बाणभट्ट की आत्मकथा अशोक के फूल आदि।
- मृत्यु — सन् 1979 ई०।
- साहित्य में स्थान — सम्मानीय साहित्यकार, महान विचारक एंव समालोचक

Roll no.

जीवन परिचय :—

हिन्दी के श्रेष्ठ निबन्धकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का जन्म सन् 1907 ई० में बलिया जिले के दूबे का छपरा नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम अनमोल द्विवेदी था। काशी जाकर इन्होंने भारतीय संस्कृति एवं ज्योतिष का उच्चतम ज्ञान प्राप्त किया परन्तु इनकी प्रतिभा का विशेष विकास विश्वविख्यात संस्था शान्ति निकेतन में हुआ। सन् 1949 ई० में इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से डी० लिट्० की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने काशी हिन्दु विश्वविद्यालय तथा पंजाब विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के पद पर कार्य किया। सन् 1979 ई० में इस वयोवृद्ध साहित्यकार का रुग्णता के कारण स्वर्गवास हो गया।

साहित्यिक परिचय :—

द्विवेदी जी हिन्दी साहित्य के प्रख्यात निबंधकार इतिहास लेखक, आलोचक, अन्वेषक समालोचक तथा उपन्यास के अतिरिक्त कुशल वक्ता तथा सफल अध्यापक भी थे। ये मौलिक चिन्तक भारतीय संस्कृति, बंगला एंव

P.T.O

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। इनकी रचनाओं में नवीनता तथा प्राचीनता का अपूर्व समन्वय था। इन्होंने 'विश्वभारती' तथा 'अभिनव भारती' ग्रन्थमाला का सम्पादन किया और निबंधकार के रूप में विचारात्मक निबंध लिखकर भारतीय संस्कृति एंव हिन्दी साहित्य की रक्षा की। द्विवेदी जी के साहित्य सेवा के लिए डी० लिट्०, पद्मभूषण तथा मंगलाप्रसाद पारितोषक से सम्मानित किया गया।

रचनाएँ :— इनकी प्रमुख रचनाओं का विवरण निम्नवत् हैं —

निबंध संग्रह :—	इतिहास	उपन्यास
• कुजज • अशोक के फूल • विचार प्रवाह • कल्पता आदि।	• 'हिन्दी साहित्य' • 'हिन्दी साहित्य • की भूमिका' आदि।	• बाणभट्ट की आत्मकथा • चारुचन्द्र लेख • पुनर्नवा • अनामदास का पोथा।

Roll no.—

प्रश्नोत्तर संख्या - 5

(ख) (ii) महादेवी वर्मा

—: संक्षिप्त परिचय :—	
• नाम —	महादेवी वर्मा ।
• जन्म —	सन् 1907 ई० ।
• जन्मस्थान —	फर्रुखाबाद (उ०प्र०) ।
• माता का नाम —	श्रीमती हेमरानी ।
• पिता का नाम —	श्री गोबिन्द सहाय ।
• उपलब्धियां —	महिला विद्यापीठ की प्राचार्या, पद्मभूषण पुरस्कार, मंगलाप्रसाद पुरस्कार तथा भारत-भारती आदि ।
• कृतियाँ —	नीहार, रश्मि, नीरजा, दीपशिखा ।
• भाषा —	खड़ी बोली, ब्रज भाषा
• मृत्यु —	सन् 1987 ई० ।

जीवन परिचय :—

श्रीमती महादेवी वर्मा जी का जन्म सन् 1907ई० में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में एक शिक्षित परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम गोबिन्द सहाय वर्मा था तथा माता का नाम श्रीमती हेमरानी था। इनकी प्राराम्भिक शिक्षा इन्दौर तथा उच्च शिक्षा प्रयाग में हुई। इन्होंने नारी स्वातन्त्रय के लिए संघर्ष किया। श्रीमती महादेवी वर्मा जी कुछ वर्षो तक उत्तर प्रदेश की विधान परिषद की मनोनीत सदस्या भी रही। महादेवी वर्मा एक प्रसिद्ध कवियित्री तथा निष्ठावान उपासिका थी। सन् 1987ई० को इस महान लेखिका का स्वर्गवास हो गया।

साहित्यिक परिचय :—

श्रीमती महादेवी वर्मा जी का मुख्य रचना क्षेत्र काव्य हैं। इनकी गणना छायावाद कवियो की वृहत चतुष्टयी (प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी) में होती हैं। इनकी रचना में वेदना की प्रधानता हैं।

Roll no.

काव्य के अतिरिक्त इनकी बहुत सी श्रेष्ठ गद्य रचनाएँ भी हैं। 'चाँद' पत्रिका का सम्पादन करके इन्होंने नारी को अपनी स्वातन्त्रता तथा अधिकारो पर सजग किया। भारत सरकार से इन्होंने 'पद्मभूषण' की उपाधि प्राप्त की। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से इन्हें 'सेकसरिया पुरस्कार' तथा 'मंगलाप्रसाद पारितोषक' मिला। 'भारत-भारती' तथा 'यामा' पर इन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

कृतियाँ:— महादेवी वर्मा जी का प्रमुख कृतित्व इस प्रकार है—

गद्य रचनाएँ—	काव्य—
• अतीत के चलचित्र • स्मृति की रेखाएँ • श्रृंखला की कड़िया	• नीहार • रश्मि • नीरजा • दीपशिखा • यामा

प्रश्नोत्तर संख्या – 6

बहादुर कहानी का सारांश

'अमरकान्त' जी द्वारा लिखि कहानी 'बहादुर' एक मध्यमवर्गीय परिवार में नौकर के साथ परिवारजनो द्वारा किए गए कटु व्यवहार की कहानी हैं। इसकी समीक्षा इस प्रकार है—

- **दिलबहादुर से बहादुर बनना :—**

दिलबहादुर 12-13 साल का पहाड़ी लड़का हैं। पिता युद्ध में मारे गए हैं और माता गुस्सैल स्वभाव की हैं। माँ की मार के कारण भागकर एक मध्यमवर्गीय परिवार में नौकरी कर ली। वहां की गृहस्वामिनी निर्मला ने बड़ी उदारता से दिल बहादुर का नाम बदलकर बहादुर कर देती हैं!

Roll no.

- **परिश्रमी एंव हँसमुख बहादुर :—**

बहादुर ईमानदार एंव परिश्रमी लड़का हैं। वह पूरे घर की साफ- सफाई के साथ सभी सदस्यो की जरुरतो का भी ख्याल रखता हैं। हँसना और हँसाना उसकी आदत बन गई हैं। सोते वक्त रात में कोई न कोई गाना अवश्य गुन-गुनाता हैं।

- **किशोर की बदतमीजी :—**

शान शौकत एंव शैब से रहने वाला किशोर निर्मला का बड़ा लड़का हैं। अपने सारे काम बहादुर से कराता हैं। छोटी- छोटी बात पर बहादुर को गाली देना बुरा भला कहना उसकी आदत हैं।

- **निर्मला के रिश्तेदार द्वारा चोरी का आरोप :—**

निर्मला के व्यवहार में भी कुछ परिवर्तन आने लगा था। बहादुर के लिए उसने रोटिया सेकनी बन्द कर दी। एक दिन निर्मला के घर रिश्तेदार आए। उन्होंने ग्यारह रुपए चोरी होने की बात कही। सबने बहादुर पर सक किया।

- **बहादुर का घर से भागना :—**

एक दिन उसके हाथ से सिल छूटकर गिर गया। पिटाई के डर से वह घर से भाग गया। अपना सारा सामान वही छोड़ दिया। किशोर को अब उसकी ईमानदारी पर विश्वास हो गया था। अन्त में सभी लोग पश्चाताप करने लगे।

7. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्ड के एक प्रश्न का उत्तर दीजिए : 5

(i) 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के आधार पर 'कर्ण' की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के 'सप्तम सर्ग' की कथावस्तु लिखिए।

(ii) 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य कथा अपने शब्दों में लिखिए।

(iii) 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर 'द्रौपदी' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के कथानक को अपने शब्दों में लिखिए।

(iv) 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर 'दिवाकर मित्र' का चरित्रांकन कीजिए।

अथवा 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के चतुर्थ अंक की कथा अपने शब्दों में लिखिए।

(v) 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के प्रथम एवं द्वितीय सर्ग की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।

(vi) 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य के आधार पर 'दशरथ' की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य के चौथे सर्ग 'श्रवण' की कथावस्तु लिखिए।

खण्ड–ख

8. (क) निम्नलिखित अवतरणों का सन्दर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए। 2+5=7

हंसराजः तस्यै वरं दत्त्वा हिमवति शकुनिसडे संन्यपतत्। नानाप्रकाराः हंसमयूरादयः शकुनिगणाः समागत्य एकस्मिन् महति पाषाणतले संन्यपतन्। हंसराजः आत्मनः चित्तरुचितं स्वामिकम् आगत्य वृणुयात् इति दुहितरमादिदेशः। सा शकुनसङ्घे अवलोकयन्ती मणिवर्णग्रीवं चित्रप्रेक्षणं मयूरं दृष्ट्वा 'अयं मे स्वामिको भवतु' इत्यभाषत।

अथवा

Roll no.

प्रश्नोत्तर संख्या - 7

'त्यागपथी' खण्डकाव्य का चतुर्थ सर्ग :—

- **चतुर्थ सर्ग :—**

राज्यश्री एक बड़े राज्य की शासिका होकर भी दुखी हैं। वह सब कुछ छोड़कर गेरुए वस्त्र धारणकर भिक्षुणी बनना चाहती हैं। वह हर्षवर्द्धन से सन्यास ग्रहण करने की आज्ञा माँगने जाती हैं तो हर्षवर्द्धन उसे समझाते हैं कि तुम तो मन से सन्यासिनी ही हो। यदि तुम गेरुए वस्त्र ही धारण करना चाहती हो तो अपने वचनानुसार मैं भी तुम्हारे साथ सन्यास ले लूँगा। तभी दिवाकर मित्र आकर उन्हें समझाते हैं कि वास्तव में आप दोनो भाई - बहन का मन सन्यासी हैं, किन्तु आज देश की रक्षा एंव सेवा संन्यास - ग्रहण से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। दिवाकर मित्र के समझाने पर दोनो सन्यास का विचार त्यागकर देशसेवा में लग जाते हैं।

[खण्ड-ख]

प्रश्नोत्तर संख्या – 8

(क) संस्कृत गद्यांश का संसदर्भ हिन्दी अनुवाद

संकेत :— हंसराज: तस्यै: ..... इत्यभाषत ।

सन्दर्भ :— यह गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'संस्कृत-खण्ड' में संकलित 'महामना मालवीय:' नामक पाठ से उद्धृत है।

हिन्दी अनुवाद :—

हंसराज ने उसे वर देकर हिमालय के पक्षियों के समुदाय को इकट्ठा कराया। विभिन्न प्रकार के हंस, मोर आदि पक्षीगण आकर एक विशाल शितातल पर इकट्ठे हुए। हंसराज ने पुत्री को आदेश दिया कि अपना पति चुने। उसने पक्षी समुदाय की ओर देखकर मोर को कहा 'यह मेरा स्वामी हो'।

युवकः मालवीयः स्वकीयेन प्रभावपूर्णभाषणेन जनानां मनांसि अमोहयत्। अतः अस्य सुहृदः तं प्राड्विवाकपदवीं प्राप्य देशस्य श्रेष्ठतरां सेवां कर्तुं प्रेरितवन्तः । तदनुसारम् अयं विधिपरीक्षामुत्तीर्य प्रयागस्थे उच्चन्यायालय प्राड्विवाककर्म कर्तुमारभत्। विधेः प्रकृष्टज्ञानेन मधुरालापेन उदारव्यवहारेण चायं शीघ्रमेव मित्राणां न्यायाधीशानाञ्च सम्मानभाजनमभवत् ।

(ख) दिये गये पद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए- 2+5=7

भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती।।
तस्या हि मधुरं काव्यं तस्मादपि सुभाषितम्।।

अथवा

उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च ।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।।

9. निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए- 1+1=2

(i) सावन हरे न भादो सूखे।

(ii) कान पर जूँ न रेंगना।

(iii) गले का हार बनना।

(iv) हाथ कंगन को आरसी क्या?

10. अपठित गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

आजकल दूरदर्शन पर आने वाले धारावाहिक देखने का प्रचलन बढ़ गया है। बाल्यावस्था में यह शौक अच्छा नहीं है। दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले धारावाहिकों का स्तर बहुत ही घटिया होता हैं। उनमें अश्लीलता, अनास्था, फैशन तथा नैतिक बुराइयाँ ही अधिक देखने को मिलती हैं। अभी बालक मानसिक रूप से परिपक्व नहीं होते। इस उम्र में भी वे देखेंगे उसका प्रभाव निश्चित ही उनके दिमाग पर अंकित हो जाएगा। बुरी आदतों को वे शीघ्र ही अपना लेंगे। समाजशास्त्रियों के एक वर्ग का मानना है कि समाज में चारों ओर फैली बुराइयों का एक बड़ा कारण दूरदर्शन तथा चलचित्र ही हैं। सब इस बात से भली भाँति परिचित हैं। इतना सब ज्ञान होने के बाद भी यदि वे इसी राह पर आगे बढ़ते रहें तो उनसे बड़ा मूर्ख और कोई नहीं है। बिना समय की पाबंदी के घंटों दूरदर्शन के साथ चिपके रहना बिल्कुल गलत है। इससे मानसिक विकास रुक जाता है। दृष्टि में कमजोरी आ सकती है और तनाव बढ़ सकता है।

(i) दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले धारावाहिकों में क्या अधिक देखने को मिलता है? 1

(ii) दूरदर्शन का दुष्प्रभाव बच्चों पर अधिक क्यों पड़ता है? 2

(iii) दूरदर्शन के व्यसन से क्यों बचना चाहिए। 2

अथवा

Roll no.

(ख) पंद्याश का संसन्दर्भ हिन्दी अनुवाद

संकेत :- उदेति सविता .... महतामेकरुपता ।।

सन्दर्भ :-

यह पंद्याश हमारी पाठ्य - पुस्तक के 'संस्कृत - खण्ड' में संकलित 'सुभाषितरत्नानि' नामक पाठ से अवतरित है।

हिन्दी अनुवाद :-

सूर्य उदित होते समय लाल होता है और अस्त होते समय भी लाल होता है । ठीक इसी प्रकार सम्पत्ति और विपत्ति दोनो परिस्थितियो में महापुरुष एक समान रहते हैं।

प्रश्नोत्तर संख्या – 9

[मुहावरा]

(ii) कान पर जूँ रेंगना। (अनुसुनी करना)

— जनता अपनी समस्याओ के समाधान के लिए गुहार लगाती रहती हैं, पर अफसरो के कान पर जूँ तक नही रेंगती।

Roll no.

प्रश्नोत्तर संख्या - 10 [अपठित गंद्यांश]

(i) संकेत :— आजकल दूरदर्शन ..... बढ़ सकता है।

(i) ⇒ दूरदर्शन पर दिखाई जाने वाले धारावाहिको में अश्लीलता, अनास्था, फैशन तथा नैतिक बुराइयाँ अधिक देखने को मिलता है।

(ii) ⇒ दूरदर्शन का दुष्प्रभाव बच्चो पर इसलिए अधिक पड़ता है कि वह अभी मानसिक रूप से परिपक्व नही होते है। इसलिए उसका प्रभाव उनके दिमाग पर अंकित हो जाता है।

(iii) ⇒ दूरदर्शन के व्यसन से इसलिए बचना चाहिए क्योंकि इससे मानसिक विकास रुक जाता है। दृष्टि में कमजोरी आ जाती है और तनाव भी बढ़ जाता है।

महात्मा गाँधी अपना काम अपने हाथ से करने पर बल देते थे। वे प्रत्येक आश्रमवासी से आशा करते थे कि वह अपने शरीर से संबंधित प्रत्येक कार्य, सफाई तक स्वयं करेगा। उनका कहना था कि जो श्रम नहीं करता है, वह पाप करता है और पाप का अन्न खाता है। ऋषि-मुनियों ने कहा है-बिना श्रम किए जो भोजन करता है, वह वस्तुतः चोर है। महात्मा गाँधी का समस्त जीवन दर्शन श्रम सापेक्ष था। उनका समस्त अर्थशास्त्र यही बताता था कि प्रत्येक उपभोक्ता को उत्पादनकर्ता होना चाहिए। उनकी नीतियों की उपेक्षा करने के परिणाम हम आज भी भोग रहे हैं। न गरीबी कम होने में आती है, न बेरोजगारी पर नियंत्रण हो पा रहा है और न अपराधों की वृद्धि हमारे वश की बात हो रही है। दक्षिण कोरिया वासियों ने श्रमदान करके ऐसे श्रेष्ठ भवनों का निर्माण किया है, जिनसे किसी को भी ईर्ष्या हो सकती है।

(i) 'चोर' की परिभाषा क्या है? 1

(ii) गाँधीजी पापी किसे मानते थे? 2

(iii) महात्मा गाँधी का समस्त जीवन-दर्शन श्रम सापेक्ष था-का आशय क्या है? 2

11. (क) निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए :

(i) बात-वात 1

(अ) बातें और हवा (ब) रोग और दवा

(द) विचार और शिकार (स) वायु और विकार

(ii) वहन-बहन 1

(अ) ढोना और भगिनी (ब) बहना और बहिनी

(स) दोनों और पत्नी (द) बहना और भगिनी

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो अर्थ लिखिए : 1+1=2

(i) चपला (ii) पयोधर (iii) कुल (iv) मधु

(ग) निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द का चयन करके लिखिए :

(i) भले-बुरे की पहचान करने वाला-

(A) ज्ञानी (B) विद्वान

(C) विवेकी (D) पंडित

(ii) जिसने देश के साथ विश्वासघात किया हो-

(A) बागी (B) विश्वासघाती

(C) देशद्रोही (D) विद्रोही

(घ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए : 1+1=2

(i) राम और श्याम बातचीत कर रहा है।

(ii) आज सभा में अनेकों नेताओं के भाषण हुए।

(iii) अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहा है।

(iv) तुम मेरे से मत बोलो।

प्रश्नोत्तर संख्या - 11

(क) शुद्ध युग्म :—

(अ) बात-वात —

(अ) बातें और हवा

(ख) एकशब्द के दो अर्थ :—

(iii) कुल — समस्त , वंश

(ग) एक शब्द का चयन :—

(iii) जिसने देश के साथ विश्वासधात किया हो —

(स) देशद्रोही

(घ) (iii) अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहे हैं।

(iv) तुम मुझसे मत बोलो।

12. (क) वीर रस अथवा श्रृंगार रस का स्थायी भाव के साथ परिभाषा सहित उदाहरण लिखिए। 1+1=2

(ख) यमक अथवा उपमा अलंकार का लक्षण सहित उदाहरण लिखिए। 2

(ग) चौपाई अथवा सोरठा छन्द का मात्रा सहित लक्षण तथा उदाहरण लिखिए। 1+1=2

13. किसी उच्चतर विद्यालय में लिपिक के रिक्त पद पर नियुक्ति हेतु विद्यालय प्रबंधक को एक आवेदन-पत्र लिखिए। 2+4=6

अथवा

अपना कुटीर उद्योग प्रारंभ करने हेतु किसी बैंक के प्रबंधक को ऋण प्रदान करने हेतु एक पत्र लिखिए।

14. निम्नलिखित विषयों (शीर्षकों) में से किसी एक पर अपनी भाषा-शैली में निबन्ध लिखिए- 2+7=9

(i) भारत में आतंकवाद : समस्या और समाधान।

(ii) कृषक-जीवन की त्रासदी।

(iii) साहित्य समाज का दर्पण है।

(iv) विद्यालयों में स्वास्थ्य शिक्षा का महत्त्व।

(v) मेरा प्रिय साहित्यकार

Roll no.

प्रश्नोत्तर संख्या – 12.

(क) **वीर रस** :—

जब उत्साह नामक स्थायी भाव, विभाव अनुभाव और व्यभिचारी भाव आदि के द्वारा पुष्ट होता है, तब 'वीर रस' की निष्पत्ति होती है।

उदाहरणार्थ :—

"मैं सत्य कहता हूँ सखे। सुकुमार मत जानो मुझे।
यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा मानो मुझे॥
है और की ही बात क्या गर्व मैं करता नही।
मामा तथा निज तात से भी समर में डरता नही॥"

(ख) उपमा अलंकार :—

जहाँ दो भिन्न पदार्थों अथवा भिन्न व्याक्तियो में समान गुण, धर्म आदि होने के कारण सादृश्य या साधर्म की स्थापना की जाती है, वहाँ 'उपमा अलंकार' होता है।

उदाहरणार्थ:—

पीपर पात सरिस मन डोला।

Roll no.

(ग) सोरठा छन्द :—

यह दोहे के उल्टा होता है। यह अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके पहले और तीसरे चरण में 11–11 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 13–13 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरणार्थ :—

।। ।।।। ।। ऽ। ।। ऽ।। ।।।। ।।।
जोहि सुमिरत सिधि होई, गणनायक करिवर वदन।

।।। ।ऽ।। ऽ। ऽ। ऽ। ।। ।। ।।।
करहु अनुग्रह सोई, बुद्धिरासि शुभ-गुन-सदन॥

प्रश्नोत्तर संख्या – 13

लिपिक के लिए आवेदन-पत्र

सेवा में
श्री मान प्रबन्धक महोदय,
स्वामी विवेकानन्द इण्टर कॉलेज, वाराणसी

विषय- लिपिक पद हेतु आवेदन-पत्र।

महोदय,

पिछले दिनो मुझे विज्ञापन के माध्यम से पता चला कि आपके कॉलेज में लिपिक का पद रिक्त हैं। जिसके लिए मैं पूरी तरह योग्य हूँ। मैं अपनी शैक्षणिक योग्यताओ का विवरण नीचे दे रहा हूँ। आशा करता हूँ कि आप मुझे यह अवसर क प्रदान करने की कृपा करेंगें!

Roll no.

शैक्षणिक योग्यताएँ :—

परीक्षा	वर्ष	श्रेणी	बोर्ड / विश्वविद्यालय
हाईस्कूल	2009	प्रथम	उत्तर प्रदेश
इण्टर मीडियट	2011	द्वितीय	उत्तर प्रदेश
बी. एस. सी	2014	प्र/ द्वितीय	इलाहाबाद
हिन्दी टंकण	2015	प्रथम	आई.टी. आई कानपुर

मेरी अध्यापन में अत्याधिक रुचि है। मैं पूर्ण रूप से इसका निर्वाह करूँगा तथा कभी शिकायत का अवसर नहीं दूँगा।

धन्यवाद.....!

दिनांक : 17 दिसम्बर, 2023

भवदीय
क, ख, ग
वाराणसी

प्रश्नोत्तर संख्या – 14

(V) मेरा प्रिय साहित्यकार

रूपरेखा :—

(i) प्रस्तावना
(ii) जन्म तथा परिचय
(iii) शिक्षा
(iv) साहित्यिक जीवन
(v) उपसंहार

(i) प्रस्तावना :—

मुंशी प्रेमचन्द्र मेरे प्रिय एवं आदर्श साहित्यकार हैं। वे हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तम्भ थे। जिन्होंने हिन्दी जगत् को कहानिया एवं उपन्यासो की अनुपम सौगात प्रस्तुत की। अपनी उत्कृष्ट रचनाओ के लिए मुंशी प्रेमचन्द्र उपन्यास सम्राट कहे जाते हैं।

Roll no.

(ii) **जन्म तथा परिचय :—**

मुंशी प्रेमचन्द्र जी का जन्म उत्तर - प्रदेश के वाराणसी जिले में लमही नामक ग्राम में सन् 1880 ई० को एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री अजायब राय तथा माता आनन्दी देवी थी। प्रेमचन्द्र जी का वास्तविक नाम धनपत राय था।

(iii) **शिक्षा :—**

मुंशी प्रेमचन्द्र जी ने प्रारम्भ में उर्दू का ज्ञान अर्जित किया। मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद वे सरकारी नौकरी करने लगे। नौकरी के साथ ही उन्होंने अपनी इण्टर की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। बाद में स्वतंत्रता सेनानियो के प्रभाव से उन्होंने सरकारी नौकरी को तिलांजलि दे दी।

(iv) **साहित्यिक जीवन :——**

मुंशी प्रेमचन्द्र जी ने अपने अल्प साहित्यिक जीवन में लगभग 200 से अधिक कहानियाँ लिखी जिनका संग्रह आठ भागो में 'मानसरोवर' के नाम से प्रकाशित है। कहानियो के अतिरिक्त उन्होंने चौदह उपन्यास लिखे जिनमें 'गोदान' उसकी सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसके अतिरिक्त रंगभूमि, सेवासदन, गबन, प्रेमाश्रम, निर्मला, प्रतिज्ञा आदि उनके प्रचलित उपन्यास है।
ये सभी उपन्यास लेखन दृष्टि से इतने सजीव एंव सशक्त है कि लोग मुंशी प्रेमचन्द्र जी को 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से सम्मानित करते है।

Roll no.

(V) उपसंहार:—

ऐसे महान उपन्यासकार, नाटककार व साहित्यकार के लिए इससे बढ़कर और बड़ी श्रद्धांजलि क्या होगी कि उनकी मृत्यु के आठ दशकों के बाद उनकी रचनाओं की प्रासंगिकता पूर्ववत् बनी हुई है। हजारों की संख्या में लोग उनकी रचनाओं व शैली पर शोध कर रहे हैं। वह निः सन्देह हमारे हिन्दी साहित्य का गौरव थे, और हैं और सदैव ही रहेंगे।

अनुक्रमांक संख्या =